17

आनंदमयी कविता

हवा

ऊपर-नीचे दाएँ-बाएँ,
हवा चली साँय-साँय।
मुन्नी को छेड़कर,
चढ़ गई पेड़ पर।
हाथ नहीं आऊँगी,
दूर मैं उड़ जाऊँगी।
मुन्नी बोली हँसकर,
हवा रानी बस कर।
पकड़ तुझे मैं लाऊँगी,
फुग्गे में ले जाऊँगी।

– शिवचरण सरोहा

© NCERT not to be republished

चित्रकारी

मान लीजिए कि मुन्नी ने हवा से भरे फुग्गे आपको दे दिए। आप उन फुग्गों से क्या करेंगे? सोचिए, चित्र बनाइए और कुछ शब्द भी लिखिए –

कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं, आप उनमें से भी शब्द चुन सकते हैं।

हवा   फुग्गा   गुब्बारा   खेल   मुन्नी

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

चित्र में देखकर बताइए कि मुन्नी के बाईं ओर, दाईं ओर, उसके आगे और उसके पीछे क्या-क्या दिख रहा है –

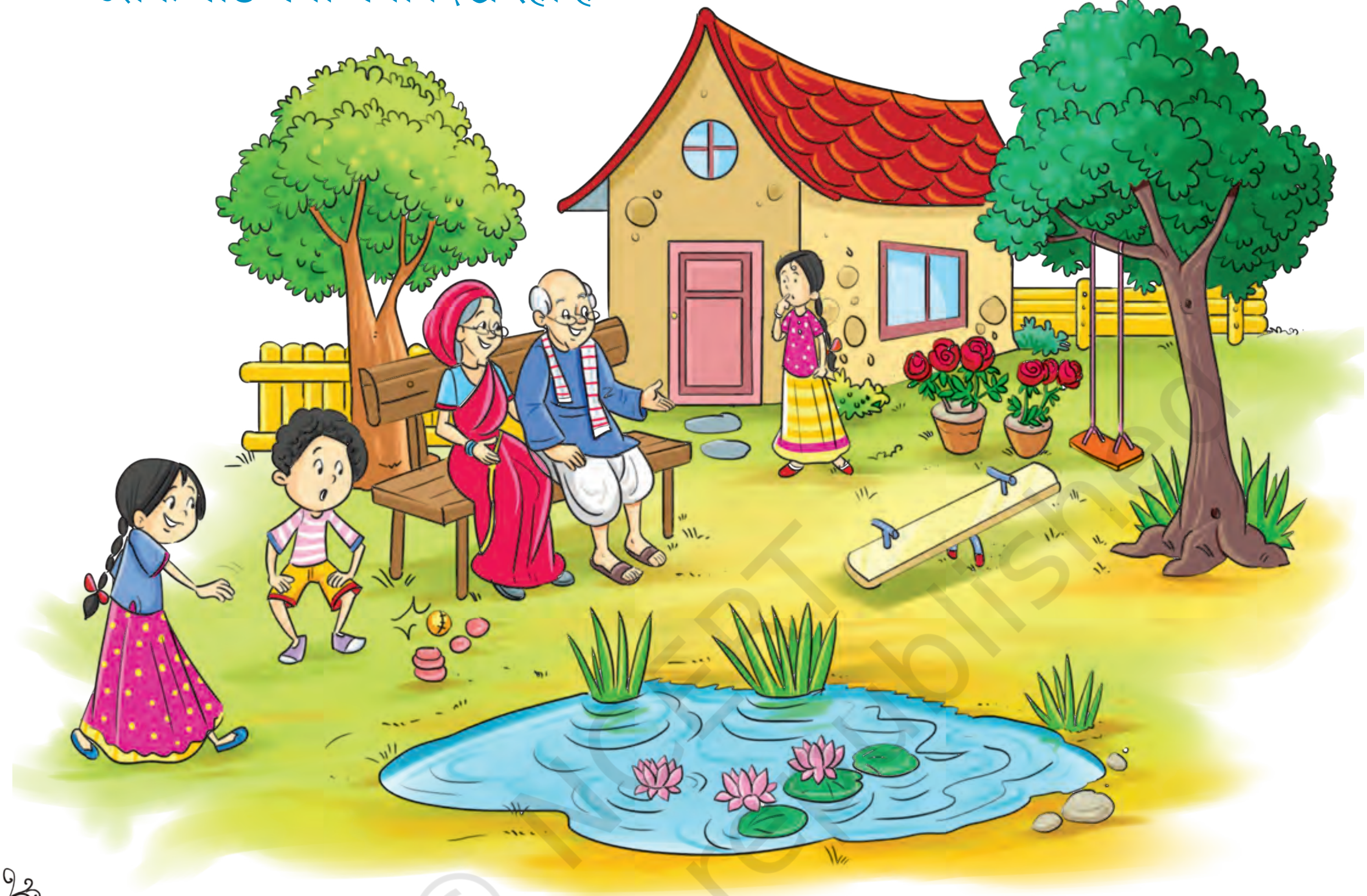

मुन्नी के दाईं ओर – ...., ...

मुन्नी के बाईं ओर – ...., ...

मुन्नी के आगे – ...., ...

मुन्नी के पीछे – ...., ...

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

भूल-भुलैया

घोड़े को जंगल तक पहुँचाइए। यह घोड़ा केवल 'ओ' के रास्ते पर ही चलता है और अन्य अक्षरों पर रुक जाता है।

ओ	औ	ओ	क	औ	ज
औ	ओ	औ	ट	औ	प
ओ	स	म	औ	र	ल
छ	ओ	औ	ठ	न	अ
ब	औ	ओ	ओ	क	झ
थ	ग	व	च	ओ	ओ

© NCERT not to be republished